संस्कार इन्द्रियसापेक्ष होते हैं। क्योंकि इन्द्रियों से प्रत्यक्ष की होती है बाह्य इन्द्रियां एवं मन। अतः संस्कार केवल दो तरह होते हैं —

(1) बाह्य संस्कार – जो एक पंचज्ञानेन्द्रिय के उत्पन्न होते हैं इन्हें निरूपण करते हैं। और

(2) आन्तरिक संस्कार – जिनको मन करते हैं या निरूपण करते हैं।

→ अतः लोक के निरीक्षण एवं विश्लेषण करना ही एक संस्कार करते हैं।

→ जो संस्कार हमारे मानस पर जो प्रतिबिम्ब या प्रतीत छोड़ जाते हैं उनको विचार (Idea) करते हैं।

* इन संस्कार की उत्पत्ति कैसे हुई — ?

लॉक के अनुसार बाह्य जगत के कारण / जड़ जगत के कारण। अतः लॉक जड़ को मानते हैं।

बर्कले ईश्वर के कारण जड़ जगत को मानते नहीं उनको आधार ईश्वर को मानते अतः ईश्वरवादी पर जड़ का खण्डन करते हैं।

ह्यूम जड़ + ईश्वर दोनों का खंडन करते हैं और कहते हैं कि संस्कार इन्द्रियसापेक्ष हैं। अन्ततः हमारे संस्कार इन्द्रियसापेक्ष हैं। इन्द्रियों से ज्ञान नहीं हुए हैं जो वो 'अज्ञेय' है।

* विचार + संस्कार में तीन प्रकार के संबंध मानते हैं —

(1) सादृश्य सम्बन्ध (similarity)

(2) कालगत या देशगत सान्निध्य संबंध (Association of contiguity in time or space)

(3) कारण कार्य संबंध (Association of causality)

* ह्यूम विज्ञान एवं संवेदना के अलावे किसी ज्ञान का स्रोत नहीं मानता।

* इन्द्रियों के किसी द्रव्य / चेतन का ज्ञान नहीं मानता।

* विज्ञानों के आधारभूत के रूप में 'आत्मा' को भी नहीं मानता। ह्यूम के अनुसार विचार, रूप, स्वाद और कोई आत्मा का पर्दे कभी अनुभव नहीं होता।

* आत्मा क्षणिक संवेदनाओं का विज्ञान व निरंतर प्रवाह मात्र है।

*

तत्त्वमीमांसा का खंडन

इस प्रकार ह्यूम ईश्वर + आत्मा + जड़ तीनों का खंडन करते हैं।

* ह्यूम जड़ तत्त्व पर प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञान
  आत्म तत्त्व पर " मनोविज्ञान का खंडन
  ईश्वर तत्त्व पर " धर्मशास्त्र

तीनों का अस्तित्व असंभव होने के कारण अंत में संशयवादी हो जाते हैं। यही इसका निष्कर्ष है।

ह्यूम * अज्ञेयवादी (Agnostic) कहलाते हैं क्योंकि उनके अनुसार 'तत्त्व' हमारे लिए अज्ञेय है।

* सन्देहवादी (Sceptic) कहलाते हैं क्योंकि उनके अनुसार हमारा ज्ञान कभी निश्चित और अनिवार्य नहीं हो सकता।

* प्रतिभासवादी (Phenomenalist) कहलाते हैं क्योंकि उनके अनुसार हमारा सारा ज्ञान विज्ञानों का ज्ञान होने के कारण प्रतिभास मात्र है।

* प्रत्यक्षवादी (Positivist) कहलाते हैं क्योंकि उनके अनुसार ईश्वर या उसके अतीन्द्रिय विषय ही हमारे ज्ञान का विषय नहीं बन सकते हैं।

* इन्द्रियानुभववादी (Empiricism) कहलाते हैं क्योंकि इनके अनुसार समस्त ज्ञान इन्द्रियानुभव से ही जनित है।

* संवेदनवादी (Sensationist) कहलाते हैं क्योंकि इनके अनुसार हमारे ज्ञान में कोई विचार तब तक नहीं आ सकता जो इन्द्रिय से न आया हो।

* काण्ट ने ह्यूम के विषय में कहा था — ह्यूम ने मेरी निद्रा से जगाने का काम किया।

* ह्यूम कार्य-कारण सिद्धान्त को भी नहीं मानते हैं।